

पर्यावरण संरक्षण का नैतिक परदृश्य

बढ़ते पारस्थितिकी संकट के कारण पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी नैतिक बहस नरितर बढ़ती जा रही है। वर्ष 2024 तक भारत में लगभग 1.3 बिलियन लोग यानी लगभग 96% आबादी PM 2.5 के स्तर के संपर्क में है, जो वशिव स्वास्थ्य संगठन के दशा-नरिदेशों से सात गुना अधिक है। पराली जलाना, शहरी कषेत्रों में वाहनों से होने वाला उत्सर्जन तथा औद्योगिक प्रदूषण जैसे कारक इस भयावह वायु गुणवत्ता की स्थतिकी और बढ़ा देते हैं, वशिषकर सरदरियों के महीनों में गंगा के मैदानी इलाकों में, ग्रीनपीस इंडिया की 6वीं वार्षिक वशिव वायु गुणवत्ता रिपोर्ट में नई दलिली को सबसे प्रदूषित राजधानी शहर का दरजा दिया गया है।

ISRO के हालिया उपग्रह डेटा से पता चलता है कि 2,431 ग्लेशियल झीलों में से 676 पघिलने के कारण आकार में काफी बढ़ गई हैं, जो जलवायु संकट की तात्कालिकता को दरशाता है। इसके अतरिकित, 25 दसिंबर 1971 से 1 अगस्त 2024 तक अरथ ओवरशूट डे (वह दिन जब मानवता द्वारा प्राकृतिक संसाधनों की खपत कसिीं दयि गए वर्ष में उन्हें पुनरजीवति करने की पृथ्वी की क्षमता से अधिक हो जाती है) में बदलाव अस्थरि उपभोग पैटर्न को रेखाकति करता है।

हिमालय कषेत्र, जसि "थरड पोल" कहा जाता है, में अदवतिय चुनौतियों उत्पन्न हो रही हैं, जनिमें बढ़ते तापमान के कारण ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (GLOF) शामिल हैं, जैसा कि अक्टूबर 2023 में सकिक्मि में ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट से स्पष्ट है। चतिजनक रूप से, संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट बताती है कि प्रवासी प्रजातियों पर कनवेशन के तहत सूचीबद्ध 44% प्रवासी प्रजातियों जनसंख्या में गरिवट का अनुभव कर रही हैं, जो वल्लिप्त होने के बढ़ते जोखिम का संकेत है। साथ में, ये कारक न केवल मानव स्वास्थ्य के लयि बलका भवषिय की पीढ़ियों और सुभेदय पारस्थितिकी प्रणालियों के लयि नैतिक दायतिव के रूप में पर्यावरण की रक्षा करने की नैतिक अनविरयता पर ज़ोर देते हैं।

पर्यावरण संरक्षण नैतिक रूप से महत्त्वपूर्ण क्यों है?

- **पर्यावरण नैतिकता:** पर्यावरण संरक्षण इस वशिवास पर आधारति है कि प्राकृतिक वशिव की रक्षा करना मनुष्य का नैतिक कर्तव्य है। यह नैतिक ज़मिमेदारी पारस्थितिकी तंत्र, वन्यजीवन और जैव वविधिता के आंतरिक मूल्य को स्वीकार करती है।
 - संरक्षण यह सुनिश्चित करता है कि हम प्रकृति के अधिकारों का सम्मान करें और अपने पर्यावरण को होने वाली अपरविरतनीय कषतिकी को रोकें, यह स्वीकार करते हुए कि प्रत्येक सजीव का अपना एक अंतरनहित मूल्य है।
- **उत्तरदायतिव का सदधिांत:** वर्तमान और भावी दोनों पीढ़ियों के कल्याण के लयि पर्यावरण का प्रबंधन और संरक्षण करना हमारा नैतिक दायतिव है।
 - यह सदधिांत वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और आवास वनिाश जैसे मुद्दों के समाधान के लयि ज़मिमेदार कार्रवाई का आह्वान करता है।
- **सभी सजीवों के बीच संसाधनों का न्यायसंगत बंटवारा:** जल, भूमि और स्वच्छ वायु सहति प्राकृतिक संसाधनों को मानव, वन्यजीव तथा भावी पीढ़ियों सहति सभी प्रजातियों के बीच समान रूप से साझा कयिा जाना चाहयि।
 - पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करता है कि संसाधनों का असंवहनीय या अनुपातहीन रूप से दोहन न हो, वशिषकर सुभेदय समुदायों के लयि।
 - उदाहरण के लयि, जल की कमी और प्रदूषण अक्सर हाशयि पर पड़े समूहों को सबसे अधिक प्रभावति करते हैं, जसिसे संसाधन वतिरण में नषिपकषता के नैतिक सदधिांत का उल्लंघन होता है।
- **सामूहिक वैश्विक उत्तरदायतिव:** जलवायु परविरतन, नरिवनीकरण और जैव वविधिता की हानि सहति पर्यावरणीय कषरण के लयि सामूहिक वैश्विक कार्रवाई की आवश्यकता है।
 - नैतिक संरक्षण इस बात पर बल देता है कि सभी राष्ट्रों को, चाहे उनकी आर्थिक या औद्योगिक स्थतिकी कुछ भी हो, पर्यावरण संरक्षण की ज़मिमेदारी लेनी चाहयि।
 - जलवायु संकट को अकेले हल नहीं कयिा जा सकता, देशों को एक साथ कार्य करना चाहयि, ज्ञान साझा करना चाहयि और सभी के लयि एक स्थायी भवषिय सुनिश्चित करने हेतु एकजुटता से कार्य करना चाहयि।
- **भावी पीढ़ियों के प्रतिकर्तव्य और अंतर-पीढ़ी समानता:** अंतर-पीढ़ी समानता इस बात पर बल देती है कि भावी पीढ़ियों के लयि पर्यावरण और उसके संसाधनों को संरक्षित करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।
 - संरक्षण संबंधी कार्य यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे आज के कार्यों से भावी पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता पर कोई असर न पड़े।
 - संसाधनों का ज़मिमेदारी से प्रबंधन करके और पारस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा करके हम भावी पीढ़ियों के लयि जीवन को सहारा देने में सकषम ग्रह छोड़ने की अपनी नैतिक प्रतबिद्धता को पूरा करते हैं।
- **मौलिक अधिकारों का उल्लंघन:** प्रदूषण, आवास वनिाश और संसाधनों की कमी सार्वजनिक स्वास्थ्य को खतरे में डालती है, गरमि का उल्लंघन करती है और महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच को रोकती है, जो स्वच्छ पर्यावरण के मौलिक अधिकार का उल्लंघन है।
 - वायु प्रदूषण केवल एक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट नहीं है, यह प्रकृति के प्रतिकर्तव्य नैतिक दायतिव का उल्लंघन है तथा भावी पीढ़ियों

को स्वच्छ वायु उपलब्ध कराने का भी उल्लंघन है।

- भारत में जल प्रदूषण से **साझा संसाधनों की उपेक्षा**, सुभेद्य समुदायों को नुकसान, पारस्थितिकी तंत्र को क्षति तथा स्वच्छ जल के अधिकार का उल्लंघन जैसी नैतिक चिंताएँ उत्पन्न होती हैं।
- भारत में मानव-वन्यजीव संघर्ष में वृद्धि एक **नैतिक दुविधा** को उजागर करती है, क्योंकि शहरीकरण प्राकृतिक आवासों पर अतिक्रमण कर रहा है, जिससे वन्यजीवों के सह-अस्तित्व और विकास के अधिकारों से समझौता हो रहा है।

पर्यावरण संरक्षण पर विभिन्न दृष्टिकोण क्या हैं?

- **सामूहिक ज़िम्मेदारी: जेम्स मलि** के अन्य लोगों के प्रतिकारवाह के विचार पर जोर देते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिये पारस्थितिकी तंत्र की रक्षा हेतु सामाजिक प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। इसमें **हमारे कार्यों की परस्पर संबद्धता** और सुभेद्य समुदायों तथा भावी पीढ़ियों पर उनके प्रभाव को पहचानना शामिल है।
 - उदाहरण के लिये, उपभोक्तावाद की नैतिक चिंता, **पर्यावरण को होने वाली हानि को न्यूनतम करने तथा स्थिरता को बढ़ावा देने के समाज के कर्तव्य पर केंद्रित है**, जिसमें उपभोक्ता की आदतों का पारस्थितिकी तंत्र एवं समग्र समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को संबोधित किया जाता है तथा व्यवसायों की पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं को अपनाने की ज़िम्मेदारी पर भी ध्यान दिया जाता है।
- **मानव-केंद्रित दृष्टिकोण: प्रदूषण से होने वाले प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभाव मानव कल्याण में सुधार के लिये संरक्षण प्रयासों को उचित ठहराते हैं।**
 - कुछ महानगरीय क्षेत्रों में प्रदूषण के उच्च स्तर को देखते हुए, **मानव-केंद्रित दृष्टिकोण** से संरक्षण के लिये नैतिक तर्क सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता के रूप में स्वच्छ पर्यावरण पर जोर देने के लिये मज़बूत करता है।
- **पारस्थितिकी केंद्रित परिप्रेक्ष्य: दार्शनिक आर्ने नेस का गहन पारस्थितिकी आंदोलन सभी सजीवों के आंतरिक मूल्य को बढ़ावा देता है तथा तर्क देता है कि पारस्थितिकी तंत्र और प्रजातियों के पास मानवीय आवश्यकताओं से स्वतंत्र अधिकार हैं।**
 - यह पारस्थितिकी केंद्रित दृष्टिकोण यह सुझाव देता है कि पर्यावरण संरक्षण न केवल मानव लाभ के लिये बल्कि सभी जीवन रूपों और पारस्थितिकी प्रणालियों के आंतरिक मूल्य हेतु एक नैतिक दायित्व है।
- **पारस्थितिकी नारीवाद/इकोफेमिनिज्म:** पारस्थितिकी नारीवाद का तर्क है कि प्रकृति का शोषण महिलाओं के पतिततात्मक शोषण के समान है।
 - यह पर्यावरण शासन में कम प्रतिनिधित्व वाले लोगों, विशेषकर महिलाओं की भागीदारी का समर्थन करता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि विभिन्न दृष्टिकोण संरक्षण पहलों को प्रभावित करते हैं।
 - इकोफेमिनिज्म प्रकृति के साथ स्नेहपूर्ण संबंध को बढ़ावा देता है तथा ऐसी संरक्षण प्रथाओं का समर्थन करता है जो पारस्थितिकी स्वास्थ्य और सामुदायिक कल्याण को प्राथमिकता देते हैं।

पर्यावरण संरक्षण के लिये आगे की राह क्या होनी चाहिये?

- **नैतिक शासन और नैतिक नेतृत्व:** पर्यावरण संरक्षण में नैतिक शासन और नैतिक नेतृत्व नरिणय लेने में पारदर्शिता तथा जवाबदेही पर जोर देता है।
 - समुदायों को शामिल करने वाली सूचनाओं तक खुली पहुँच सुनिश्चित करके और उद्योगों को जवाबदेह बनाकर अभिक्रियाशीलता व विश्वास को बढ़ावा दे सकते हैं तथा स्थायी कार्रवाई को आगे बढ़ा सकते हैं।
 - यह दृष्टिकोण **दीर्घकालिक पर्यावरण संरक्षण, न्यायसंगत संसाधन प्रबंधन और संरक्षण कानूनों का निष्पक्ष प्रवर्तन सुनिश्चित करता है।**
- **वैश्विक शासन और CBDR:** पर्यावरण संरक्षण में वैश्विक शासन, **सामान्य लेकिन विभेदित उत्तरदायित्व (CBDR)** की धारणा को मज़बूत करता है, जो राष्ट्रों की विभिन्न क्षमताओं को स्वीकार करता है।
 - अंतरराष्ट्रीय सहयोग, समान संसाधन साझाकरण और **अनुरूप जलवायु प्रतिक्रियाओं** को बढ़ावा देकर वैश्विक शासन **समावेशी समाधानों को बढ़ावा देता है।**
 - नविले स्तरों पर भी **स्थानीय क्षमताओं और उत्तरदायित्व के बीच संतुलन बनाए रखने वाली निष्पक्ष पर्यावरणीय नीतियों** को सुनिश्चित करने के लिये समान सिद्धांत लागू होने चाहिये।
- **वनीयमन और प्रवर्तन को सुदृढ़ बनाना:** सरकारों को पर्यावरण संबंधी कठोर कानून बनाने चाहिये जिसमें उल्लंघनकर्ताओं के लिये **कठोर दंड का प्रावधान हो।**
 - **राष्ट्रीय हरति अधिकरण (NGT)** जैसी संस्थाओं को उल्लंघनों के वरिद्ध त्वरित कार्रवाई करने के लिये सशक्त बनाने से **जवाबदेही बढ़ेगी तथा हानिकारक प्रथाओं पर रोक लगेगी।**
- **हरति प्रौद्योगिकियों में निवेश: जलवायु परिवर्तन से निपटने और पर्यावरणीय क्षतिको कम करने के लिये नवीकरणीय ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहनों तथा संधारणीय कृषि प्रथाओं में निवेश को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है।**
 - ये नवाचार **जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम कर सकते हैं और नमिन-कार्बन अर्थव्यवस्था** की ओर संक्रमण को बढ़ावा दे सकते हैं।
- **सामुदायिक सशक्तीकरण और शिक्षा:** स्थानीय समुदायों को **प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिये, जैसा कि संयुक्त वन प्रबंधन (JFM) जैसी पहलों से स्पष्ट है।**
 - **शिक्षा प्रणालियों को पर्यावरण साक्षरता को भी बढ़ावा देना चाहिये, ताकि व्यक्तियों को कम उम्र से ही सतत नरिणय लेने और पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं में संलग्न होने के लिये आवश्यक ज्ञान उपलब्ध कराना चाहिये।**
 - **ज़मीनी स्तर के आंदोलन सफल स्थानीय पहलों का प्रदर्शन करके लोगों को संरक्षण प्रयासों का स्वामित्व लेने के लिये प्रेरित कर सकते हैं जिन्हें अन्याय दोहराया जा सकता है।**
- **ज़िम्मेदार उपभोग पैटर्न को बढ़ावा देना:** समाज को ऐसे नयियों के साथ **न्यूनतमवाद और ज़िम्मेदार उपभोक्तावाद** को अपनाना चाहिये जो पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित करें, **एकल-उपयोग प्लास्टिक** को कम करें तथा **सतत विकल्पों** को बढ़ावा दें। यह सांस्कृतिक बदलाव **अपशिष्ट उत्पन्न** और उसके पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में सहायता करेगा।
- **विकास और पर्यावरणीय प्रबंधन में संतुलन: सतत विकास में शहरी नियोजन, कृषि और उद्योग सहित सभी क्षेत्रों में पर्यावरणीय विचारों के**

एकीकरण को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

- **हरति अवसंरचना, वृत्तीय अर्थव्यवस्था के सदिधांतों और सतत् पर्यटन** को अपनाकर समाज **पारस्थितिकी अखंडता** से समझौता किये बिना आर्थिक विकास को आगे बढ़ा सकता है, जसिसे भावी पीढ़ियों के लिये एक व्यवहार्य ग्रह सुनिश्चित हो सके।

नषिकर्ष

पर्यावरण संरक्षण में **नैतिक चिंताओं** को संबोधित करने के लिये **तत्काल सामूहिक कार्रवाई** की आवश्यकता है। **मानव स्वास्थ्य, पारस्थितिकी अखंडता और सामाजिक समानता** के परस्पर संबंध को पहचानना महत्त्वपूर्ण है। सरकारों को **सख्त नियम** लागू करने चाहिये और समुदायों को स्थायी संसाधन प्रबंधन के लिये सशक्त बनाना चाहिये जबकि शिक्षा पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देती है। ज़मिमेदार उपभोग और सार्वजनिक प्रवचन ज़मीनी स्तर की पहलों को संगठित करने के लिये महत्त्वपूर्ण हैं। जैसा कि **मार्गरेट मीड** ने कहा "कभी भी इस बात पर संदेह न करें कि विचारशील एवं प्रतबिद्ध नागरिकों का एक छोटा समूह विश्व को बदल सकता है।" अथर्ववेद का संस्कृत वाक्यांश, **"माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्या"** (पृथ्वी मेरी माँ है और मैं उसका बच्चा हूँ) पर्यावरण की देखभाल करने के हमारे कर्तव्य को दर्शाता है। नैतिक विचारों को प्राथमिकता देकर हम अपने ग्रह की रक्षा कर सकते हैं और इसके सभी नविसियों के अधिकारों को बनाए रख सकते हैं।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/ethical-landscape-of-environmental-conservation>

